

223(p)
792
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi



आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No.

792

✓
20/1

• ओ३म् •

स्वदेशी प्रचार माला

(आल्हा की ध्वनि में)

लेखक व प्रकाशक—

बालकृष्ण विद्यार्थी

मन्दिर आर्यसमाज, विजनौर

मुद्रक—

“चैतन्य” प्रिन्टिङ्ग प्रेस,

विजनौर (यू०पी०)

891.431

K 8985

प्रचार स्वदेशी का करना आपका कर्त्तव्य है ।

धारण स्वदेशी को करो पुस्तक का ये मन्तव्य है ॥

प्रथम बार }

१००० }

सन् १९३० ई०

{ एक प्रति

दो पैसे



❀ ओ३म् ❀

हरि ओ३म् का सुमिरन करके लीन्ही कलम दवात उठाय ।

रक्त शुरु करूँ आल्हा की सुनियो भाई कान लगाय ॥

आओ करें प्रचार स्वदेशी जिससे होवे बेड़ा पार ।

हिन्दु मुसलिम मिलकर करलो भारतमाता का उद्धार ॥

पाँच हजार बरस होगये हैं भारत सोया चादर तान ।

जब से फूट हुई आपस में पराधीन है हिन्दुस्तान ॥

पराधीनता में दुख पाये अब भी आँखें खुलती नाय ।

करो प्रचार स्वदेशी भाई गांधी जी यह रहे बताय ॥

पुत्र समान समझे प्रजा को राजा का ये है कर्तव्य ।

राज न करना चाहते हैं ये अपना सिद्ध करते मन्तव्य ॥

धन और धान्य भारत का लूटें कंगाली भारत होजाय ।

कौड़ी कौड़ी को ले जावें दमड़ी रहने पावे नाय ॥

ऐसी बात कौन है इनमें भारत का धन ये ले जाँय ।

कष्ट उठाकर अन्न कमावें फिर भी हम भूखे रह जाँय ॥

ध्यान लगा कर सुनलो भाई खेती करती है मैशीन ।

हल का काम वही है देती बैल बनी रहती मैशीन ॥

खेतमें चलता है जब इंजन धक धक २ करता जाय ।

बीस हलौकी धरती को वह एक साथ जोत ले जाय ॥

घास फूस की नहीं ज़रूरत वह तो केवल ईंधन लाय ।

अजब तरहका बना ये हल है खावे क्या और क्या देजाय ॥

मेहनत कम करनी पड़ती है कम करना पड़ता है काम ।

थोड़ाही सा समय है लगता थोड़ा देना पड़ता है दाम ॥

थोड़े मज़दूरों की ज़रूरत थोड़े सहकारी रह जाँय ।
 खाद अनोखा मिल जाता है गऊ माताको दें मरवाय ॥
 जूते आदि खाल के बनते खून में कपड़े दें रंगवाय ।
 गऊ खून में रंगे वस्त्र को भारत में देवें भिजवाय ॥

मांस को गोरों की पल्टन में फौरन देते हैं भिजवाय ।
 कमजोरों का मांस है खाते शेर को देण हाय करजाँय ॥
 हड्डियाँ भी बेकार न जाती चाकू के दस्ते बन जाँय ।
 गऊ माता की हड्डी लगती हाती दांत वही कहलाय ॥

बजरी बनती है हड्डी से बूरा हड्डी से बन जाय ।
 गऊ माता के रक्षक बन कर बूरे में हड्डी खा जाँय ॥
 खाद हड्डियों का बनता है इससे खेती उत्तम होय ।
 गऊ की हड्डियों को तज कर खाद न उत्तम कोई होय ॥

इनजन से खेती होती है गऊओं का न काम रह जाँय ।
 गऊ बैलों की हुई बेकारी उनको फिर देवें मरवाय ॥
 बड़े बड़े अब बशर यहां के इनजन से खेती कर लेयं ।
 भाव अगर दस सेर गोहूँ का पन्द्रह सेर बेच वे देयं ॥

नहीं मुकाबिल इनके आता दीन किसान बिचारा कोय ।
 इनके ही कारण दीनों का कारोबार बन्द सब होय ॥
 काम नहीं मज़दूरों का है सब कुछ कर लेती मैशीन ।
 कुट्टी काटे खेत जोत ले खेती काट लेय मैशीन ॥

गन्ना पेलै रस को पकावै गुड़ तैयार करै मैशीन ।
 कपड़ा बुनकर हमको देवै रेल सवारी है मैशीन ॥

खाना भी बनता मशीन से पानी भरती है मैशीन ।

जल, खुशकी के मोटर चलते पोत में चलती है मैशीन ॥

इसी प्रकार के और बहुत से काम को करती है मैशीन ।

मजदूरों की हुई बेकारी जब तैयार हुई मैशीन ॥

विदेशी वस्तु से है हानि थोड़ी थोड़ी दूँ बतलाय ।

वस्त्र पहनते रक्क बिरक्के उनका हाल सुनो चितलाय ॥

रुई कपास जाय भारत से तीन सेर भाव में होय ।

कपड़ा जो तैयार करावें तिगुना एक रुपये में होय ॥

तीन सेर रुई रुपये की उसका कपड़ा हो तैयार ।

गऊ माता की चरबी ही से मांडी उसकी हो तैयार ॥

एक सेर रुई का कपड़ा आध सेर मांडी भी जाय ।

आध सेर मांडी के कारण एक गऊ का जीवन जाय ॥

एक साल में नव्वे लाख का कपड़ा भारत में आजाय ।

मांडी मांडी ही के कारण ५४ लाख जीव मर जाय ॥

गाय, सुअर शामिल है दोनों धिक् २ ऐ भारत संतान ।

हिन्दू मुसलिम नाम धरा है नाम डुबोया हिन्दुस्तान ॥

चिकना चमकीला कपड़ा जो बाहर से भारत में आय ।

चरबी की मांडी लगती है तुमको सच २ दिया बताय ॥

दूध मलाई रबड़ी खोया घी बिन गौओं के है नाय ।

कपड़े ही के कारण भाई ५४ लाख जीव मर जाय ॥

फिर घी दूध कहाँसे पाओ ज़िन्दा रहना कठिन होजाय ।

जन्म हुए बच्चे की खातिर दूध न मिलना है दुःखदाय ॥

वहाँ के कपड़े की बिक्री है भारत का बिकता है नाय ।
 इसीलिये भारत के जुलाहों का भी रोज़गार छिन जाय ॥
 भारत के बेकार जुलाहे कपड़े के कारण है हाय ।
 हानिकारक यह कपड़ा है ईश्वर करें नष्ट हो जाय ॥

पैसे की बनती सौ सुइयाँ यहाँ तो मिलतीं केवल सात ।
 एक रुपये के बदले में सोलह भारत से वे ले जात ॥
 बड़ा बड़ा सामान विलायत में लोहे का हो तैयार ।
 कम खर्ची के कारण भाई बेकार हुए लाखों लोहार ॥

होय गये बेकार बड़ी भी बतलाओ खाने कहाँ जाय ।
 मज़दूरी भी करना चाहें रही यहाँ मज़दूरी नाय ॥
 कारोबार बन्द किये हमारे भारत में अब कुछ भी नाय ।
 यतन करें क्या इसका भाई तुमको वह भी दूँ बतलाय ॥

बेकारी जब हुई यहाँ पर खाने तक को मिलता नाय ।
 हर एक पेशेवर तज पेशा चोरी जारी करते जाय ॥
 प्राचीन समय में यहाँ पर चोरी कभी होती थी नाय ।
 एक समय थी हालत यहाँकी तुमको वह भी दूँ बतलाय ॥

चन्द्रगुप्त राजा था यहाँ का याद करे उसको संसार ।
 फ़ारस श्याम चीन और लङ्का तिब्बत था उसका ग़मख़वार
 जब कोई जाता था बाहर को घर में ताले देता नाय ।
 बाहर भीतर कहीं पड़ी हो, वस्तु कोई उठाता नाय ॥

धन और धान्यकी नहीं कमी थी इसीलिये उठती थी नाय
 मगर आज लुटगया है भारत इसमें अब कुछ रक्कत नाय

चीनी यात्री मेगास्थनीज था प्रशंसा उसने की महान् ।

जो उसने लिखी बड़ाई उनको जानै सभी जहान् ॥

स्त्री होती हैं पतिव्रता चोरी जारी होती है नाय ।

अत्याचार न था गौवों पर प्रजा को दुख था कोई नाय ॥

थे न मुकदमेबाज़ यहाँ पर भगड़े आपस में थे नाय ।

मार काट होती न यहाँ पर धर्म कर्म के थे समुदाय ॥

धरम के ऊपर चली न तेगा ऐसा था यह भारतवर्ष ।

हाय मगर अफ़सोस आज है फूट का घर यह भारतवर्ष ॥

फूट का नाम नहीं था जहाँ पर भाई भाई लड़ते हाय ।

फिर बतलाओ कैसे नैया भारत की ये पार हो जाय ॥

बापके सन्मुख बेटा लड़ता मनमें शरमाता है नाय ।

होश में आओ अब भी देखो बिगड़ी फिर सुधरेगी नाय ॥

रामराज्य की प्रशंसा है पढ़ लो इतिहासों के बीच ।

उनकी ही सन्तान कहाते धर्म कर्म तज बन गये नीच ॥

भाई के भाई हैं दुश्मन मिलकर छुरियां रहे चलाय ।

थोड़े से लालच के कारण क़ैद में हमको लेयँ बुलाय ॥

कुरसी पर बैठे हैं कोई बनते हैं भारत के शाह ।

जुल्म न कोई वे करते हैं जो बनते भारत के शाह ॥

देशद्रोही जो बनते हैं भारत के दुश्मन हैं हाय ।

पंचम जार्ज नहीं कुछ कहते जो कहते हैं हैं निजभाय ॥

हुकम न देता बादशाह है हुकम चलाते भारत वीर ।

भारत के प्रेमी के जिगर में चार पार कर देते तीर ॥

लालच के वश मैं पड़कर क्यों भाई को देते मरचाय ।

भाई दुनियाँ भर में प्यारा भाई को बचवाओ भाय ॥

देश का कपड़ा जो है पहनते किसका लूट रहे हैं धाम ।

देशकी वस्तु काममें लावें फिर तुम्हारा क्या बिगड़े काम ॥

गवर्नमेन्ट के जितने नौकर जलते स्वदेशी के नाम ।

उनकी भी अब सुनो हकीकत कैसे कैसे करते काम ॥

पढ़ने को एक रोज़ गया मैं मनमें छ्वाई खुशी महान् ।

तख्ते पर यों लगा मैं लिखने जय जय प्यारे हिन्दुस्तान ॥

गाढ़ा पहनो गाढ़ा पहनो जिससे होवे बेड़ा पार ।

भारत की डूबी जो नैया इससे ही होवेगी पार ॥

बाईकाट विदेशी का हो सर पर धारो गाँधी कैप ।

फिल्ट कैप का नाश होय अब नाम रहे एक गाँधी कैप ॥

इतना ही लिखने पाया था पंडित जी भी पहुँचे आय ।

तख्ते पर की पढ़ी लिखाई पेडकी चिंता पहुँची आय ॥

मुझसे फिर यों कहने लागे तूने क्या यह लिखा है भाय ।

पता कलकूर को लग जावे मेरी नौकरो दे छुड़वाय ॥

पुराने कपड़े हैं जो विदेशी उनको क्या हम दें आग ।

कहा यों मैंने, नहीं है दुश्मन, फिर क्यों उसमें देवो आग ॥

विनाशकाल विपरीत बुद्धि है चिन्ता नौकरी की है आज ।

फंसे लोभ में भारतवासी उन्नति करें ईश महाराज ॥

भारत के कोने कोने में हो स्वदेशी का प्रचार ।

डूबी जाती भारत नैया ईश्वर करदो इसको पार ॥

भारत की उन्नति का मार्ग गान्धी जी ने दिखलाया ।
 काम अधूरा ही है लेकिन पूरा नहीं होने पाया ॥
 सब मिल हाथ लगावें इसमें तो यह पूरा होवेगा ।
 दीन हीन भारत की हालत को एक क्षण में खोवेगा ॥
 मेल से रहो अगर तुम भाई कौन सतावे तुम को आय ।
 लेकिन कर्मक्षेत्र में भाई आती रहती है ही बलाय ॥
 उनसे घबरा कर गर भाई पीछे ही को जाओ भाग ।
 तो बेशक उन्नति भारत की का बुझ जावेगा ये चिराग ॥
 अङ्गरेजों का बुरा न चाहो उनको गाली दो तुम नाथ ।
 लेकिन उन्नति अपनी चाहो तुम से कहता यही बुझाय ॥
 करो प्रचार स्वदेशी ही का भगड़ा करना उचित है नाथ ।
 सिर्फ स्वदेशी ही वस्तु से मन इच्छा पूरण हो जाय ॥
 अपना अगर भला तुम चाहो करो दूसरों का उपकार ।
 बारबार कहना पड़ता है करो स्वदेशी का प्रचार ॥
 दीन दुखी डूबे भारत की नैया ईश्वर करदे पार ।
 गान्धी जी का कहना मानो करो स्वदेशी का प्रचार ॥
 गलती माफ़ करो अब मेरी करो स्वदेशी का प्रचार ।
 जय हो महात्मागान्धी तुमको भूलेगा न सकल संसार ॥
 नहीं विषय कोई मिलता है सिर्फ स्वदेशी का है नाम ।
 लेखक नहीं न चतुर प्रवीण बालकृष्ण मेरा है नाम ॥

॥ ओ३म् शांतिश्शांतिश्शांतिः ॥

॥ इति ॥